

کشتی

کے لوگوں کو بھی پسیا کی ۔ اور کئی نوجوان
 بچے حاصل کی ۔ سمندر پر یہ دانشمندانہ فرما
 س کے دوسرے دو تندرستھیں کو بچھا لیا ۔
 کی کشتی عت کا لہری تک اعلیٰ نہ پہنچا ۔
 پتا اور تک میں ہر دو ماہ کے بیچ میں کو کشت
 "عالم دوست" بیچ جیتے کا مستحکم عار و پر
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"

جب یہ پھرتے رہے اور گہر کا فیصلہ کیا تو
 نے نے سے کھنڈیا ۔ کہ پہلے کھنڈے پر چیر
 سمندر کا نظریہ پاک کر ۔ پتھر یہ پہاڑ
 سمندر پر پریشانی پائی ۔ اور اس کی آواز میں اس
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"

کشتی

یہ لڑائی کے بن باس کے خاتمہ پر کشتی
 کا لابی بنے ۔ پھر لڑائی اور دودھن خانہ کے
 کے "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"

کشتی

اور یہی فخرت صدمہ ہوئی تھا ۔ جب خوش فہم
 اور دہم دی ہے ۔
 سوچ کا دعوت ۔ آسمان کی بارش اور دریا
 کا لانا سب ہی کھانے صدمہ کرتے ہیں ۔ لڑکی
 طہری اور بھی ہم رہی ہیں ۔ لڑکی کے ذریعے
 پیچھے ہر ہے ہیں ۔ نفس پر نفس بولنا جا رہا
 ہے ۔ غریب پر غریب سے پیچھے رہیں ہلے ہیں
 بیچے شام تک صفائی کا کام چل رہا ہے
 ایک دل کے اندر ایک قسم کا جوش دھیں سام
 ہے ۔ گریک ہیں آہن ۔ کہ میرے لئے کوئی چر ہو
 دل کش ہیں ۔
 کہتے ہیں کہ بھگوان نے اپنی دلیلی ہم
 یافتہ رہ بھی کر ہے ۔ پانی طہ ہے ۔ اور دریا
 تھی ۔ چاند لونا کسی کے استحقاق کی خوشیوں
 منا جاتی ہیں ۔ آج پھر وہی جہاں تھی ہے ۔
 رگ اسی کی آمدی ہوئے ہیں سہلے خوش ہو کر
 زردی میں جاتے ۔ اور بھگوان کے دشتی کرتے ہیں
 ہنگر

بہت آگے ۔ موسم گرمی کے چلے سرورج
 سے گرم اور جاتی دیتی ہے ۔ جب چھ ماہ چلائی
 کے اندر بند پڑے تھے ۔ وہ خوشی ہیں ۔ گرم پانی
 تھی اور ہے ۔ چاند کا طرف ہے تاب نکاح
 سے بلانا کا بندہ گرم کا تعلق کرتے تھے ۔ وہ بار
 دگی ہیں یا کئے لوگوں کو بہا دیکھ کر جو ملے آہستہ
 یک ہیں مں کرنا ابھار تک زلفت کی ایک پڑی
 لہری ہیں ۔
 جب دو گر علی سے ڈاکو کالوں کے اندر
 تھے ۔ یہ اس وقت بھی اس کے لئے
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"
 "عالم دوست" کے "عالم دوست" کے "عالم دوست"

جہم

جہم

جہم

اور یہ گرمی

اس نا اور موقع کو ہاتھ سے نہ جانے دیں!

منہ

پرتاپ پارتی

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्यो नमः ॥ अथ षोडशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वले अध्यायविषे
 (अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके) इसवचनकरकै श्रीभगवान् नै मनुष्यदेहविषे पूर्वले पुण्यपापकर्मोंके अनुसार अभिव्यक्तिकूं प्राप्तहुई शुभवासनावोंकूं
 संसारवृक्षका अवांतरमूलरूपकरिकै कथनकन्याथा ॥ तेवासनाहीं पूर्वनवमे अध्यायविषे प्राणीयोंकी प्रकृतिरूपकरिकै दैवी आसुरी राक्षसी यहतीनप्रकारकीयां सूचन
 करीयांथ्यां ॥ तहां वेदनै बोधनकन्येजे नित्यनैमित्तिककर्महैं तथा आत्मज्ञानकेशमदमादिकउपायहैं ॥ तिनदोनोंके अनुष्ठानकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्वि
 कीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासना दैवीप्रकृति कहीजावैहै ॥ और वेदउक्तनिषेधका उल्लंघनकरिकै स्वभावतै सिद्धरागद्वेषकेअनुसारी तथासर्वअनर्थोंका
 कारणरूप जा प्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिकाहेतुभूत जा राजसीतामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना आसुरीप्रकृति तथाराक्षसीप्रकृति कहीजावैहै ॥ तहां विष
 यभोगोंकी प्रधानताकरिकै रागकीप्रबलतातै ताअशुभवासनाविषे आसुरीप्रकृतिपणाहै ॥ और हिंसाकीप्रधानताकरिकै द्वेषकीप्रबलतातै ताअशुभवासनाविषे
 राक्षसीप्रकृतिपणाहै ॥ इतनादोनोंका अवांतरभेदहै इति ॥ अब इसअध्यायविषे यहवार्ताकहेहैं ॥ शास्त्रकेअनुसारिपणेकरिकै तिसशास्त्रविहितअर्थविषे
 प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासनातों दैवीसंपद कहीजावैहै ॥ और शास्त्रकाउल्लंघनकरिकै तिसशास्त्रनिषिद्ध
 विषयोंविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा राजसी तामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना राक्षसी आसुरी इनदोनोंकी एकताकरिकै आसुरीसंपद कही
 जावैहै ॥ इसरीतिसै शुभरूपताकरिकै तथाअशुभरूपकरिकै दोप्रकारकाहीं वासनावोंकाभेदहै ॥ यहहीदोप्रकारकाभेद (द्रयाहप्राजापत्यादेवाश्वासुराश्च)
 इत्यादिकश्रुतियोंविषे कथनकन्याहै ॥ तहांदैवीसंपदरूपशुभवासनातों इसअधिकारीपुरुषके मोक्षकाहेतुहै ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना इसपुरुषके बंध
 काहेतुहै ॥ यातै दैवीसंपदरूपशुभवासनातों इसअधिकारीपुरुषनै अवश्यकरिकै ग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना अवश्यकरिकै परि
 त्यागकरणेयोग्यहै ॥ सो शुभवासनावोंकाग्रहण तथाअशुभवासनावोंकापरित्याग तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपजानेतैविनाहोवैनहीं ॥ यातै श्रीभगवान् नै तिनशुभवा
 सनावोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथा तिनअशुभवासनावोंकेपरित्यागकरावणेवासतै तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपकूं कथनकरणेहारायहषोडशाध्याय प्रारंभकरीताहै ॥
 तहां प्रथम तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् ग्रहणकरणेयोग्यदैवीसंपदकेस्वरूपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानंदमश्चयज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥

अभयम् । सत्त्वसंशुद्धिः । ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानम् । दर्मः । च । यज्ञः । च । स्वाध्यायः । तपः । आर्जवम् ॥ १ ॥

॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अभय अंतःकरणकीशुद्धि ज्ञानयोगदोनोंविषेस्थिति दान तथा दर्म तथा यज्ञ स्वाध्याय तप
 आर्जव यहसर्वदैवीसंपदरूपहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनै उपदेशकन्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे संशयतैरहितहोइकै जो तिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेविषे तत्परताहै ताकानाम अभयहै ॥
 अथवा सर्वपरिग्रहतैरहित एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवौंगा इसप्रकारकेभयतैं जोरहितपणाहै ताकानाम अभयहै ॥ और अंतःकरणकी जा सम्यक्निर्मलताहै
 ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे जा परमेश्वरकेस्वरूपजाननेकीयोग्यताहै यहहीं ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे सम्यक्पणाहै ॥ अथवा
 परवंचन माया अनृत इत्यादिकोंकाजोपरित्यागहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां आपणे अर्थकीसिद्धिकरणेवासतै जिंसीकिसीमिसकरिकै जो परका
 वशकरणाहै ताकानाम परवंचनहै ॥ और हृदयविषे अन्यप्रकारकाअभिप्रायराखिकै बाह्यतैं अन्यप्रकारकाव्यवहारकरणा याकानाम मायाहै ॥ और जैसा
 वृत्तांतदेख्याहोवै तैसावृत्तांत मुखतैंनहींकथनकरणा किंतु तिसतैंअन्यथाहींकथनकरणा याकानाम अनृतहै ॥ इत्यादिकोंतैंजोरहितपणाहै ताकानाम सत्वसंशु
 द्धिहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रतैं जोआत्माकेस्वरूपकानिश्चयहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और चित्तकीएकाग्रताकरिकै तिसस्वरूपका जोआपणेअनुभवविषे आरूढपणा
 है ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोग दोनोंविषे जा व्यवस्थितिहै अर्थात् सर्वकालविषे तत्परताहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ अथवा (अभयंसत्वसंशु
 द्धिज्ञानयोगव्यवस्थितिः) इसवचनका यहदूसरा अर्थकरणा ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) ॥ अर्थयह ॥ हमारेतैं सर्वभूतप्राणीयोंकेताई अभयप्राप्तहोवै ॥
 इसप्रकारका अभयदानदेणेकासंकल्प संन्यासकेग्रहणकालविषेहोवैहै ॥ तासंकल्पकाजो परिपालनहै अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जो किसीभीप्राणीकूं भयकीप्रा
 प्ति नहींकरणीहै ताकानाम अभयहै ॥ यहअभयरूपधर्म दूसरेभी परमहंसकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ और श्रवण मनननिदिध्यासन इनतीनोंकीपरिपक्वताकरिकै
 अंतःकरणका असंभावनाविपरीतभावनादिकमलोंतैं जो रहितपणाहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका जेआत्मसाक्षात्कारहै ताकानाम
 ज्ञानहै ॥ और मनोनाश वासनाक्षय इनदोनोंकेअनुकूल जो पुरुषप्रयत्नहै ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोगदोनोंकरिकै जासंसारिजनोतैंविलक्षण जीवन्मुक्तिरूपअव
 स्थितिहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ इसप्रकारकेव्याख्यानकीयेहुए यहअभयादिकदैवीसंपद फलरूपहींजानणी ॥ तहां भगवद्भक्तितैंविना साअंतःकरण
 कीशुद्धि होतीनहीं यातैं ताअंतःकरणकीशुद्धिकेकथनकरिकै साभगवद्भक्तिभी कथनहुईजानणी ॥ काहेतैं (महात्मानस्तुमांपार्थदैवीप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यन
 न्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम्) इस नवमेअध्यायकेश्लोकविषे दैवीसंपदविषे भगवद्भक्तिकाभी कथनकन्याथा ॥ और साभगवद्भक्ति अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातैं श्रीभ

गवान् नै ईहां अभयादिकोंके साथि तिस भगवद्भक्तिका पठन कन्यानहीं इति ॥ इस प्रकार महान् भाग्यवाले परमहंस संन्यासीयोंके फलभूत दैवी संपद कूंकथन करिके श्री भगवान् अब तिन संन्यासीयोंतै अन्य गृहस्थादिकोंके साधनभूत दैवी संपद कूंकथन करेहैं (दानं दमश्च इति) तहां आपणे ममत्व अभिमानके विषय जे अन्न सुवर्ण गौ भूमि गृह इत्यादिक पदार्थहैं ॥ तिन अन्नादिक पदार्थोंका यथाशक्ति परिमाण तथा श्रद्धा भक्ति पूर्वक जो अतिथि ब्राह्मणादिकोंके ताई देणाहै ताका नाम दानहै ॥ और श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका जो स्वस्व विषय तै निवृत्ति रूप संयमहै ताका नाम दमहै ॥ यद्यपि गृहस्थ पुरुषोंविषे सर्व प्रकार तै इंद्रियोंका संयम संभवता नहीं ॥ तथापि ऋतु कालादिकोंतै अतिरिक्त काल विषे जो मैथुनादिकोंका नहीं करणाहै यहहीं तिन गृहस्थोंके इंद्रियोंका संयमहै ॥ ईहां (दमश्च) इस वचन विषे स्थित जो चकारहै सो चकार ईहां नहीं कथन करेहुए दूसरे भी निवृत्ति रूप धर्मोंके समुच्चय करावणे वासतैहैं ॥ और शास्त्र विहित कर्म विशेष कानाम यज्ञहै सो यज्ञ दो प्रकार का होवैहै ॥ एक तौ श्रौत यज्ञ होवैहै ॥ और दूसरा स्मार्त यज्ञ होवैहै ॥ तहां अग्नि होत्र दर्श पूर्ण मास सोमयाग इत्यादिक श्रौत यज्ञ कह्ये जावैहैं ॥ और देव यज्ञ पितृ यज्ञ भूत यज्ञ मनुष्य यज्ञ यह चारों स्मार्त यज्ञ कहे जावैहैं ॥ यद्यपि ब्रह्म यज्ञ भी स्मार्त यज्ञहीं कह्ये जावैहै । तथापि ईहां तिस ब्रह्म यज्ञ का स्वाध्याय पद करिके पृथक्हीं कथन कन्याहै ॥ यातै ईहां यज्ञ शब्द करिके चारिहीं स्मार्त यज्ञ ग्रहण कन्येहैं ॥ ईहां (यज्ञश्च) इस वचन विषे स्थित जो चकारहै ॥ सो चकार ईहां नहीं कथन कन्येहुए दूसरे भी प्रवृत्ति रूप धर्मोंके समुच्चय करावणे वासतैहैं ॥ यह दान दम यज्ञ तिनों गृहस्थ पुरुषकेहीं दैवी संपद रूपहै ॥ और पुण्य विशेष की उत्पत्ति वासतै जो ऋगादिक वेदोंका अध्ययनहै ताका नाम स्वाध्यायहै ॥ इस स्वाध्याय कूंकहीं ब्रह्म यज्ञ कहेहैं ॥ यद्यपि पूर्व उक्त यज्ञ शब्द करिके पंच प्रकारके स्मार्त यज्ञोंका कथन संभव होइ सकेहै ॥ तथापि तिस स्वाध्याय विषे ब्रह्मचारी का असाधारण धर्म पणा कथन करणे वासतै श्री भगवान् नै ईहां स्वाध्याय का पृथक् कथन कन्याहै ॥ और आगे सप्तदश अध्याय विषे कथन कन्या जो शारीर वाचिक मानसिक यह तीन प्रकार का तपहै ॥ सो तीन प्रकार का तपहीं ईहां तप शब्द करिके ग्रहण करणा ॥ सो तप वानप्रस्थ का असाधारण धर्महै ॥ इस प्रकार संन्यास गृहस्थ ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ इन चारि आश्रमोंके असाधारण धर्मों कूंकथन करिके अब ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारि वर्णोंके असाधारण धर्मोंका कथन करेहैं (आर्जवं इति) तहां वक्र भाव का जो परित्यागहै ताका नाम आर्जवहै ॥ अर्थात् श्रद्धावान् श्रोतावोंके समीप निश्चय कन्येहुए अर्थ का जो नहीं गुह्य रखणाहै ताका नाम आर्जवहै इति ॥ १ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ॥ दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ अहिंसा । सत्यं । अक्रोधः । त्यागः । शान्तिः । अपैशुनं । दया । भूतेषु । अलोलुप्त्वं । मार्दवं । ह्रीः । अचापलम् ॥ २ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन

अहिंसा सत्य अक्रोध त्याग शान्ति अपैशुन सर्वभूतोविषे दया अलोलुप्त्व मार्दव ऋही अचापल यहसर्व दैवीसंपद रूपहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्राणीयोंके जीवकारूपवृत्तिकाजोछेदनहै ताकानाम हिंसाहै ताहिंसातैंजोरहितपणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात्जिसजिसप्राणीका जिसजिसवृत्तितैं जीवनहोताहोवै ॥ तिसतिस प्राणिके तिसतिसवृत्तिका कदाचित्भी छेदनहींकरणा याकानाम अहिंसाहै ॥ और अनर्थकाअजनक ऐसाजो यथार्थअर्थका बोधकवचनहै तिसवचनका सर्वदा उच्चारणकरणा याकानाम सत्यहै ॥ तहां जिसयथार्थअर्थकेबोधकवचनकेउच्चारणतैं ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहो तीहोवै तिसविषे सत्यताकेनिवृत्तकरणेवासतैं अनर्थकाअजनक यहविशेषणकथनकन्याहै ॥ और अन्यप्राणियोंनैं वाणीकरिकैनिरादरकीयेहुए तथाताडनकीयेहुए उत्पन्नभयाजो क्रोधहै ॥ ताक्रोधका तिसीकालविषे जोउपशमनहैं ताकानाम अक्रोधहै ॥ और शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकाजोसंन्यासहै ताकानामत्यागहै ॥ यद्यपि कहां दानकूंभी त्यागकहेहैं ॥ तथापि सोदान पूर्वश्लोकविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां त्यागशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यासहीं ग्रहणकरणा ॥ और अंतःकरणका जोउपशमहै ताकानाम शान्तिहै ॥ और परोक्षकालविषे अन्यपुरुषकेदोषोंकूं अन्यपुरुषकेआगे जोप्रगटकरणाहै ताकानाम पैशुनहैं ॥ तिसपैशुनके अभावकानाम अपैशुनहै ॥ और दुःखीप्राणीयोंऊपरि जाक्रुपाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथाभोगकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जो इंद्रियोंकाअविक्रियपणाहै ताकानाम अलोलुप्त्वहै ॥ और क्रूरस्वभावतैंरहितपणेकानाम मार्दवहै ॥ अर्थात् व्यर्थपूर्वपक्षादिकोंकूंकरणेहारे शिष्यादिकोंकेप्रतिभी अप्रियवाणीतैंरहितहोइकै जोप्रियवाणीकरिकै बोधनकरणाहै ताकानाम मार्दवहै ॥ और नहींकरणेयोग्यकार्यविषयकप्रवृत्तिकेआरंभविषे तिसप्रवृत्तिका प्रतिबंधक जालोकलजाहै ताकानाम ऋहीहै ॥ और प्रयोजनतैंविनाभी जोवाक् पाणि पाद इत्यादिकइंद्रियोंके व्यापारका करणाहै ताकानाम चापलहै ॥ ताचापलकाजो अभावहै ताकानाम अचापलहै ॥ तहां आर्जवतैंलैके अचापलपर्यंत यह पूर्वउक्त ब्राह्मणके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तेजःक्षामाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता ॥ भवंतिसंपददैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥ तेजः । क्षमा । धृतिः । शौचम् । अद्रोहः । नातिमानिता । भवन्ति । संपदम् । दैवीम् अभिजातस्य । भारत ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत तेज क्षमा धृति शौच अद्रोह नातिमानिता यहसर्व सत्त्वगुणमयी वांसनाकूं संपादनकरिकैजन्म्येहुएपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रगल्भताकानाम तेजहै ॥ अर्थात् स्त्रीबालकादिकमूढजनोंकरिकै जो अभिभवकूँनहींप्राप्तहोनाहै ॥ ताकानाम तेजहै ॥ और सामर्थ्यके विद्यमानहुएभी जो परिभवकरणेहारेपुरुषोंऊपरि क्रोधनहींकरनाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और व्याकुलताकूँप्राप्तहुएभीदेहइंद्रियोंके स्थिरताकरणेका जो प्रयत्न विशेषहै ॥ जिसप्रयत्नविशेषकरिकै स्थिरकन्येहुए शरीरइंद्रिय व्याकुलताकूँप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताप्रयत्नविशेषकानाम धृतिहै ॥ यह तेज क्षमा धृति तीनों क्षत्रियके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और धनादिकअर्थोंकेसंपादनादिकोंविषे जो माया अनृतआदिकोंतैरहितपणाहै ताकानाम शौचहै ॥ यहशौच अंतरकाशौचहीं जानणा ॥ मृत्तिकाजलादिकोंकरिकैजन्य शरीरकीशुद्धिरूप बाह्यशौचका ईहां शौचशब्दकरिकै ग्रहणकरानहीं ॥ काहेतैं तिसशौचकूँ शरीरकीशुद्धिरूपताकरिकै बाह्यपणाहोनेतैं अंतःकरणकीवासनारूपताहैनहीं ॥ और ईहांप्रसंगविषेतों सात्त्विकादिकभेदकरिकैभिन्न अंतःकरणकीवासनावोंकाहीं दैवीआसुरीसंपदरूपकरिकै प्रतिपादन विवक्षितहै ॥ यातैं ताशौचपदकरिकै तिसबाह्यशौचकाग्रहणकरानहीं ॥ और स्वाध्यायकीन्यांई जिसीकिसीरूपकरिकै तिसबाह्यशौचकूँभी जो वास नारूपअंगोकारकरिये ॥ तों शौचशब्दकरिकै तिसबाह्यशौचकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ और किसीप्राणीकेहननकरणेकीइच्छाकरिकै जो शस्त्रादिकोंकाग्रहणहै ताकानाम द्रोहहै ॥ ताद्रोहतै जोनिवृत्तिहै ताकानाम अद्रोहहै ॥ यह शौच अद्रोह दोनों वैश्यके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और अत्यंतमानीपणेका नाम अतिमानिताहै ॥ अर्थात् आपणेविषे पूज्यत्वअतिशयकीजाभावनाहै ताकानाम अतिमानिताहै ॥ ताअतिमानिताका जोअभावहै ताकानाम नाति मानिताहै ॥ अर्थात् आपणेकरिकैपूज्य जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णहैं तिनोंकेआगे जोनम्रभावहै ताकानाम नातिमानिताहै ॥ यहनातिमानिता शूद्रका दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महै इति ॥ ईहां (तमेतंवदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इत्यादिकश्रुतियोंनैं अत्मज्ञानके इच्छाकेउपायरूपकरिकैकथनकन्येअसाधारणरूप तथासाधारणरूप वर्णआश्रमकेधर्महैं ॥ तेसर्वधर्मभी ईहां दैवीसंपदरूपकरिकैग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार अभयधर्मतैं आदिलैकेनातिमानितार्धमपर्यंत तीनश्लोकोंकरिकै कथनकन्येजे भिन्नभिन्न वर्णआश्रमकेधर्महैं ॥ तेधर्म इसपुरुषविषे उत्पन्नहोवैं तहां किसीप्रकारकेपुरुषविषे तेधर्म उत्पन्नहोवैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (संपददैवीअभिजातस्यइति) हेअर्जुन इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकैअ भिव्यक्तिकूँप्राप्तहुआ जो शुद्धसत्त्वगुणमय वासनावोंकासमूहहै ॥ तिसशुभवासनावोंकासमूहकूँ आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूँप्राप्तहु आजोपुरुषहै ॥ जिसपुरुषकूँ आगेश्रेयकीप्राप्तिहोणीहै ॥ तिसपुरुषकूँहीं यहअभयादिकधर्म प्राप्तहोवैं ॥ यहवात्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पुण्यःपुण्येनकर्मणाभवति पापःपापेन ॥) अर्थयह ॥ पूर्वपूर्वजन्मकेपुण्यकर्मकीवासनाकरिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यवान्हो

वैहै ॥ और पूर्वपूर्वजन्मके पापकर्मकी वासनाकरिकै यह पुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पापवान् होवैहै इति ॥ ईहां (हेभारत) इस संबोधनके कहनेकरिकै श्रीभगवान् नूनै यह अर्थ सूचनकन्या ॥ शुद्धवंशविषे उत्पन्नहोनेतैं तूं अर्जुन अत्यंतपवित्रहैं ॥ यातैं तूं अर्जुन इन पूर्वउक्त दैवीसंपदरूपधर्मोंके संपादनकरणे कूं योग्यहैं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वतीनश्लोकोंकरिकै ग्राह्यतारूपकरिकै दैवीसंपदकूं कथनकन्या ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागरूपकरिकै आसुरीसंपदकूं एक श्लोककरिकै संक्षेपतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दंभोदपोऽतिमानश्चक्रोधः पारुष्यमेव च ॥ अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थसंपदमासुरीम् ॥ ४ ॥ दंभः । दर्पः । अतिमानः च । क्रोधः । पारुष्यम् । एव । च । अज्ञानं । च । अभिजातस्य । पार्थ । संपदम् । आसुरीम् ॥ ४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे पार्थ रंजो तमोगुणमय अशुभवासनाकूं संपादनकरिकै जन्म्येहु ए पुरुषकूं दंभं दर्पं तथा अतिमानं क्रोधं तथा पारुष्यं तथा अज्ञानं यह दोषहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ४ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन आपणे महान्पणे की सिद्धि वासतैं लोकोंके समीप आपणे कूं अत्यंत धर्मात्मापणे करिकै जो प्रसिद्ध करणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और धन विद्या कुल स्वजन रूप कर्म इत्यादिकहैं निमित्त जिसविषे ऐसा जो श्रेष्ठपुरुषोंके अपमानकरणे काहेतु भूत गर्वविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और आपणेविषे जो अत्यंत पूज्यत्वरूप अतिशयताका आरोपहै ताकानाम अतिमानहै ॥ जिस अतिमानकरिकै असुर पराभवकूं प्राप्तहोते भयेहैं ॥ यहवार्ता (देवाश्चासुराश्चोभये प्राजापत्याः पस्पृधिरेततोऽसुरा अतिमानेनैव कस्मिन्वयं जुहुयामेति स्वेप्सेवा स्येषु जुह्वतश्चेरुस्तेऽतिमानेनैव पराबभूवुस्तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्य ह्येतन्मुखं यदतिमानः इति ॥) इस शतपथब्राह्मणविषे कथन करीहै ॥ और आपणे अनिष्टकरणेविषे तथा परके अनिष्टकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणे हारा जो अभिज्वलनरूप अंतःकरण कीवृत्तिविशेषहै जिसकूं क्षोभभीकहेहैं ताकानाम क्रोधहै ॥ और प्रत्यक्ष अत्यंत रूक्षवचनका जो उच्चारणहै ताकानाम पारुष्यहै ॥ ईहां (पारुष्यमेव च) इसवचनविषे स्थित जो चकारहै ॥ सोचकार ईहां नहीं कथनकन्येहु ए जे भावरूप चपलतादिकदोषहैं तिन सर्वदोषोंके समुच्चयकरावणे वासतैंहै ॥ और यहकार्य हमारेकूं करणे योग्यहै यहकार्य हमारेकूं नहीं करणे योग्यहै याप्रकारका जो कर्तव्यविषयकहै ताविवेकके अभावकानाम अज्ञानहै ॥ ईहां (अज्ञानं च) इसवचनविषे स्थित जो चकारहै ॥ सोचकार ईहां नहीं कथनकन्येहु ए जे अभावरूप अधृति आदिकदोष हैं तिन दोषोंके भी समुच्चयकरावणे वासतैंहै ॥ तहां ऐसे दंभादिकदोष किस पुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसी अर्जुन की जिज्ञासाकेहु ए श्रीभगवान् कहेहै (आसुरीसंपदं अभिजातस्य इति) हे अर्जुन इस शरीरके आ

रंभकालविषे पूर्वलेपापकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ तथा असुरपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय ऐसाजो रजोतमोगुणमय अशुभवासनावोंका समूह है ॥ तिसअशुभवासनावोंकेसमूहकू आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै जिसपुरुषका आगेअश्रेयहोणाहै ॥ ऐसेनिंदित पुरुषकू तेदंभतैलैकेअज्ञानपर्यंत सर्वदोषहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ पूर्वउक्त अभयादिकगुण तिसपुरुषकू कदाचित्भी प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां (हेपार्थ) इससंबोधनकेकहणे करिकै श्रीभगवान्नें अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकन्या ॥ विशुद्धकुलविषेउत्पन्नहुई पृथ्वामाताका तूंपुत्रहैं ॥ यातैं इसदंभदर्पादिक असुरसंपदके तूं योग्यन हीहै इति ॥ ईहां मूलश्लोकविषे (अतिमानश्च) इसपदकेस्थानविषे (अभिमानश्च) इसप्रकारकापाठ यद्यपि बहुतपुस्तकोंविषेहै ॥ तथापि श्रीभाष्यकारोंनें तथाभाष्यकेव्याख्यानकर्त्ता श्रीस्वामीआनंदगिरिनें तथाश्रीस्वामिमधुसूदननें (अतिमानश्च) इसप्रकारकेपाठकूअंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकन्याहै ॥ यातैं ईहां (अतिमानश्च) इसप्रकारकाहींपाठलिखाहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व च्यारिश्लोकोंकरिकै दैवीसंपद तथाआसुरीसंपद यहदोप्रकारकासंपद कथनकन्या ॥ अब श्रीभगवान् इनदोनोंसंपदोंके भिन्नभिन्न फलकू कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकू तिसदैवीसंपदविषेप्रवृत्तकरणेवासतै तथातिसआसुरी संपदतैनिवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासुरीमता ॥ माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥ दैवीसंपत् । विमोक्षांय । निबंधाय । आसुरी । मता । मा । शूचः । संपदम् । दैवी । अभिजातः । अंसि । पांडव ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैवीसंपत् मोक्षवासतै होवैहै और आसुरीसंपत् बंधकेवासतै मानीहै ॥ हेपांडव तूं दैवी संपदकू संपादनकरिकैजन्म्या है यातैं तूं मृत शोककर ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे जिसजिस वर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवान्नें जाजा फलकी इच्छातैरहित सात्त्विकीक्रिया विधानकरीहै ॥ सासाक्रिया तिसीतिसीवर्णकी तथातिसी तिसीआश्रमकी दैवीसंपत्कहीजावैहै ॥ सादैवीसंपत् सत्त्वशुद्धि भगवद्भक्ति ज्ञानयोगव्यवस्थिति इतनैपर्यंत सिद्धहुई इसअधिकारीपुरुषकू संसारबंधनतैं विमोक्ष वासतैहीहोवैहै ॥ अर्थात् सादैवीसंपत् इसअधिकारीपुरुषकू कैवल्यमोक्षकीहीं प्रातिकरेहै ॥ यातैं आपणेश्रेयकीइच्छाकरणेहारेपुरुषोंनें सादैवीसंपत्हीं ग्रहण करणेयोग्यहै इति ॥ और तिनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा तिनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे ॥ जिसजिसवर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवा

नूनें जाजा फलकीइच्छापूर्वक तथाअहंकारपूर्वक राजसीतामसीक्रिया निषेधकरीहै ॥ सासानिषिद्धक्रिया तिसतिसवर्णकी तथातिसतिसआश्रमकी आसुरीसंपत्त कहीजावैहै ॥ इसीआसुरीसंपत्तविषेहीं राक्षसीप्रकृतिका अंतर्भावहै ॥ साआसुरीसंपत्ततौ नियमतें संसाररूपबंधकेवासतैहीं शास्त्रोंकूं तथाशास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं संमतहै ॥ अर्थात् सर्वशास्त्र सर्वशास्त्रवेत्तापुरुष तिसआसुरसंपत्तकूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारबंधकाही कारण कहेहैं ॥ यातें श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषोंने साआसुरीसंपत्त अवश्यकरिकैपरित्यागकरणयोग्यहै ॥ तहां मैअर्जुन दैवीसंपदकरिकैयुक्तहूं अथवा आसुरीसंपदकरिकैयुक्तहूं इसप्रकारके संशययुक्तअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् धैर्यदेवैहै (माशुचःइति) हेअर्जुन मैअर्जुन आसुरीसंपदकरिकैयुक्तहूं इसप्रकारकीशंकाकरिकै तूं शोककूं मतप्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुनभी इसशरी रकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुई सात्त्विकीशुभवासनावोंकूं आपणेअंतःकरणविषे प्रादुर्भावहुआदेखिकैहीं इसजन्मकूंप्राप्तहुआहैं ॥ अर्थात् इसजन्मतैंपूर्वभी तुमनें कल्याणकाहींसंपादनकन्याहै और आगेभी तुमाराकल्याणहींहोणाहै ॥ इसकारणतैं आपणेविषेआसुरीसंपदकीशंकाकरिकै तुमारेकूंशो ककरणाउचितनहींहै इति ॥ ईहां (हेपांडव) इससंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नें यहअर्थ सूचनकन्या ॥ जबी पांडुराजाकेदूसरेपुत्रोंविषेभी सादैवीसंपत्तप्रसिद्धहीं देखणेविषेआवैहै ॥ तबी मैपरमेश्वरकेअनन्यभक्ततैंअर्जुनविषे सादैवीसंपत्तहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ ॥ हेभगवन् राक्षसीप्रकृतिकातौ आसुरीसंपत्तविषे अंतर्भावहोवो ॥ काहेतैं शास्त्रनिषिद्धक्रियाकीअभिमुखता आसुरीसंपदविषे तथाराक्षसीप्रकृतिविषे तुल्यहींहै ॥ और किसीस्थलविषे आसुरी संपत्त राक्षसीप्रकृति इनदोनोंका जो भिन्नभिन्नकथनकन्याहै ॥ सोभी विषयभोगकीप्रधानताकरिकै तथार्जीवाहिंसाकीप्रधानताकरिकै संभवहोइसकेहै ॥ परंतु दैवीसंपत्त आसुरीसंपत्त इनदोनोंतैंभिन्न तीसरीमानुषीप्रकृतितौ जुदाहींहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सामानुषीप्रकृति जुदाहींकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्रयाःप्राजा पत्याःप्रजापतौपितरि ब्रह्मचर्यमूषुर्देवामनुष्याअसुराइति) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए देवता मनुष्य असुर यहतीनों तिसप्रजापतिपिताकेसमीप ब्रह्मचर्य कूंकरतेभये इति ॥ यातैं सातीसरी मानुषीप्रकृतिभी आसुरीसंपत्तकीन्याई हेयकोटिविषे कहीचहिये अथवा दैवीसंपत्तकीन्याई उपादेयकोटिविषे कहीचहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) द्वौभूतसर्गौलोकेऽस्मिन्दैवआसुरएवच ॥ दैवोविस्तरशःप्रोक्तःआसुरंपार्थमेशृणु ॥ ६ ॥ द्वौ । भूतसर्गौ । लोके । अस्मिन् । दैवः । आसुरः । एव । च । दैवः । विस्तरशः । प्रोक्तः । आसुरम् । पार्थ । मे । शृणु ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेपार्थ इस लोकविषे दोप्रकारके हीं भूतसर्गहैं एकतौं दैवसर्गहै और दूसरा आसुरसर्गहै तहां दैवसर्गतौं हमनें तुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैं कथनकन्याहै अब दूसरे आसुरसर्गकूं तूं हमारैतैं श्रवणकर ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इससंसारविषे दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ अर्थात् दोप्रकारकीहीं मनुष्योंकीसृष्टिहै ॥ तहां तेदोप्रकारकेसर्ग कौनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (दैवआसुरएवच) हेअर्जुन एकतौं दैवसर्गहै ॥ और दूसरा आसुरसर्गहै ॥ इनदोनोंसर्गोंतैंभिन्न तीसराकोई राक्षससर्ग अथवा मानुष्यसर्ग हैनहीं ॥ तहां जोमनुष्य जिसकालविषे शास्त्रजन्यसंस्कारोंकीप्रबलताकरिकै स्वभावसिद्धरागद्वेषकूं अभिभवकरिकै केवल धर्मपरायणहींहोवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे देवकह्याजावैहै ॥ और जोमनुष्य जिसकालविषे स्वभावसिद्धरागद्वेषकी प्रबलताकरिकै शास्त्रजन्यसंस्कारोंकूं अभिभवकरिकै केवल अधर्मपरायणहीं होवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे असुर कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं दोप्रकारकाहीं मनुष्यसर्गसिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धर्म अधर्म इनदोनोंतैं भिन्न तीसरीकोईकोटिहैनहीं ॥ किंतु लोकविषे तथावेदविषे धर्म अधर्म यहदोकोटिहीं प्रसिद्धहै ॥ तहां दोप्रकारकाहीं भूतसर्गहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (द्रयाहप्राजापत्या देवाश्चासुराश्च ततःकनीयसाएवदेवाज्यायसाअसुराः) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ एकतौं देवहैं दूसरेअसुरहैं ॥ तहां असुरोंतैं देवताछोटेहैं ॥ और देवताओंतैं असुरबड़ेहैं इति ॥ और दम दान दया इनतीनोंका विरोधकरणेहाराजो (त्रयाःप्राजापत्याः) इत्यादिकवाक्यहै ॥ तिसवाक्यविषेतौं दम दान दया इनतीनोंतैंरहित मनुष्यहीं असुरभाववालेहुए किसीसमानधर्मकरिकै देवकह्येजावैहैं तथा मनुष्यकह्ये जावैहैं तथा असुरकह्येजावैहैं ॥ यातैं तिसवाक्यतैं तीसरेभूतसर्गकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तहां तिसप्रसंगविषे प्रजापतिनैं एकहीं दम इसअक्षरकरिकै दमतैंरहितमनुष्योंके प्रतिताैं इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमका उपदेशकन्याहै ॥ और दानतैंरहितमनुष्योंकेप्रतिताैं दानकाउपदेशकन्याहै ॥ और दयातैंरहितमनुष्योंकेप्रतिताैं दयाकाउपदेशकन्याहै ॥ इसप्रकार एकमनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंकेप्रतिहीं प्रजापतिनैं अधिकारभेदतैं दम दान दया इनतीनोंकाउपदेशकन्याहै ॥ कोईतिसवचनविषे परस्परविजातीय देव असुर मनुष्य यहतीनों विवक्षितनहींहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रकेउपदेशका एकमनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ देवता तथाअसुर शास्त्रउपदेशकेअधिकारीहोवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ राक्षसीप्रकृति तथामानुषीप्रकृति यहदोनोंप्रकृतियां आसुरीसंपत्विषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ ताआसुरीसंपत्तितैं तेदोनों भिन्ननहींहैं ॥ यातैं देवसर्ग आसुरसर्ग यहदोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं यहजो पूर्ववचनकह्याथा सोयुक्तहीहै इति ॥ हेअर्जुन तिनदोप्रकारकेभूतसर्गोंविषे प्रथमजो दैवभूतसर्गहै ॥ सोदैवभूतसर्गतौं हमनेंतुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैंकथनकन्याहै ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौं स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकन्याहै और द्वादशेअध्यायविषेतौं

भगवद्भक्तकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकन्याहै ॥ और त्रयोदशेअध्यायविषेतौ ज्ञानकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकन्याहै ॥ और चतुर्दशेअध्यायविषेतौ गुणातीनपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकन्याहै ॥ और इसषोडशेअध्यायविषेतौ (अभयसत्त्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनोकरिकै सोदैवसर्ग कथनकन्याहै ॥ अब दूसरे असुरभूतसर्गकूं मैविस्तारतैं प्रतिपादनकरताहूं ॥ तिसकूं तूंश्रवणकर ॥ अर्थात् तिसअसुरभूतसर्गकेपरित्यागकरणेवासतै प्रथम तिसआसुरभूतसर्गकूं तूं निश्चयकर ॥ काहेतैं जिसअनिष्टपदार्थका भलीप्रकारतैंज्ञानहोवैहै ॥ सोअनिष्टपदार्थहीं परित्याग कन्याजावैहै ॥ तिसपदार्थकेस्वरूपजानेतैंविना तिसपदार्थका परित्यागकन्याजावैनहीं इति ॥ तहां (हेपार्थ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान् नैं अर्जुनविषे आपणसंबंधोपणा कथनकन्या । ताकरिकै अर्जुनविषयक उपेक्षाकाअभाव सूचनकन्या ॥ अर्थात् मैपरमेश्वर कदाचित्भी तुमारीउपेक्षानहींकरोंगा इति ॥ ६ ॥ * ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागकरणेयोग्यआसुरीसंपदकूं प्राणीयोंकाविशेषणरूपकरिकै कथनकरेहै (तानहंदिपतःक्रूरान्) इसश्लोकतैंपूर्वस्थित द्वादशश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) प्रवृत्तिचनिवृत्तिचजनानविदुरासुराः ॥ नशौचंनापिचाचारो नसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥ प्रवृत्ति । च । निवृत्ति । च । जेनाः । न । विदुः । आसुराः । न । शौचं । न । अपि । च । आचारः । न । सत्यं । तेषु । विद्यते ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन असुरस्वभाववाले मनुष्य धर्मकूं तथा अधर्मकूं नैंहीं जानतेहैं इसकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे शौच नैंहीं रहेहै तथा आचार भी नैंहीं रहेहै तथासत्यभी नैंहीं रहेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दंभदर्पादिरूपअसुरस्वभाववाले मनुष्य प्रवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै तिसधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानते नहीं ॥ ईहां (प्रवृत्तिच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै तिसधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ तथा तेआसुरमनुष्य निवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ ईहां (निवृत्तिच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै तिसअधर्मकेप्रतिपादकनिषेधवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताअधर्मकेप्रतिपादक निषेधवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे बाह्यशौच तथाअंतरशौच यहदोप्रकारकाशौचभी नैंहींरहेहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै जाशरीरकीशुद्धिहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै जोरागद्वेषादिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ और मनुआदिकश्रेष्ठपुरुषोंनैं धर्मशास्त्रविषे कथनकन्याजोआचारहै ॥ सोआचारभी तिनआसुरमनुष्योंविषे रहतानहीं ॥ तथा प्रिय हित यथार्थ

भाषणरूप जो सत्य है ॥ सो सत्य भी तिन आसुरपुरुषों विषे रहतानहीं ॥ ऐसे शौचतैरहित तथा आचारतैरहित तथामिथ्यावादी मायावी असुरमनुष्य इसलोकविषे भी प्रसिद्धहीं है इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् प्रवृत्तिका विषय भूत जो धर्म है ॥ तथा निवृत्तिका विषय भूत जो अधर्म है ॥ तिन धर्म अधर्म दोनों का प्रतिपादक वेदरूप प्रमाण विद्यमानहीं है ॥ कैसा हे सो वेदरूप प्रमाण ॥ भ्रम प्रमाद आदिक सर्व दोषों तैरहित है ॥ तथा साक्षात् परमेश्वर की आज्ञारूप है ॥ तथा सर्वलोकों विषे प्रसिद्ध है ॥ और तिस वेद के अनुसारी स्मृति पुराण इतिहास आदिक भी तिस धर्म अधर्म के प्रतिपादक विद्यमानहीं है ॥ ऐसे प्रमाण भूत वेदों के तथा स्मृति पुराण इतिहास आदिकों के विद्यमान हुए भी तिन आसुरपुरुषों कूं तिस धर्म अधर्म का अज्ञान तथा ता के प्रमाण का अज्ञान किस कारण तै होवै ॥ और तिन पुरुषों कूं ता धर्म अधर्म के तथा ता के बोधक प्रमाण के ज्ञान हुए वेदरूप आज्ञा के उलंघन करने हारे पुरुषों कूं शासना करने हारे परमेश्वर के विद्यमान हुए तिन पुरुषों कूं वेद उक्त अर्थ कान अनुष्ठान करिके शौच आचारादि कों तैरहित पणा भी किस कारण तै होवै है ॥ जिस कारण तै दुष्ट जनों कूं शासना करने हारा परमेश्वर भी लोकविषे तथा वेदविषे प्रसिद्धहीं है ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे हैं ॥

(मू० श्लो०) असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ॥ अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहेतुकम् ॥ ८ ॥ असत्यं । अप्रतिष्ठं । ते । जगत् ।

आहुः । अनीश्वरम् । अपरस्परसंभूतं । किं । अन्यत् । कामहेतुकम् ॥ ८ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन ते आसुरपुरुष इस जगत् कूं

असत्य अप्रतिष्ठ अनीश्वरम् अपरस्परसंभूत कामहेतुक कहे हैं इस जगत् का दूसरा कोई कारण नहीं है ॥ ८ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन ते आसुरपुरुष इस जगत् कूं असत्य कहे हैं ॥ तहां प्रत्यक्षादिक प्रमाणों करिके नहीं बाध कूं प्राप्त हुआ है तात्पर्य का विषय जिसका ऐसा जो तत्त्व वस्तु का बोधक वेदरूप प्रमाण है तथा तिस वेदरूप प्रमाण के अनुसारी जे स्मृति पुराण इतिहास आदिक हैं तिनों कानाम सत्य है ॥ ऐसा सत्य नहीं है विद्यमान जिस विषे ता कानाम असत्य है ॥ ऐसा असत्य रूप इस जगत् कूं कहे हैं ॥ यद्यपि ॥ ऋगादिक चारि वेद तथा मनुस्मृति आदिक स्मृतियां तथा भागवतादिक अष्टादश पुराण तथा महाभारतादिक इतिहास प्रत्यक्ष प्रमाण करिके सिद्ध हैं ॥ तिन प्रत्यक्ष सिद्ध वेद आदिकों कानिषेध करणा संभवतानहीं ॥ तथापि ते आसुरपुरुष तिन वेदों की तथा स्मृति पुराण इतिहास आदिकों की प्रमाणता कूं अंगीकार करते नहीं ॥ या तै प्रमाणता रूप विशेषण के अभाव तै तिस प्रमाणता विशिष्ट वेद आदिकों का अभाव कथन कन्या है ॥ और असत्य होने तैहीं इस जगत् कूं ते आसुरपुरुष अप्रतिष्ठ कहे हैं ॥ तहां नहीं है धर्म अधर्म रूप प्रतिष्ठा व्यवस्था का हेतु जिसका ता कानाम अप्रतिष्ठ है ॥ अर्थात् ते आसुरपुरुष धर्म अधर्म कूं इस जगत् के व्यवस्था का हेतु मानते नहीं ॥ तथा ते आसुरपुरुष इस जगत् कूं अनीश्वर कहे हैं ॥ तहां शुभ अशुभ कर्म के सुख दुःख रूप फल के

देणेविषे नहींहै ईश्वर नियंता जिसका ताकानाम अनीश्वरहै ॥ ऐसाअनीश्वर इसजगत्कूं कहेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ बलवान्पापरूपप्रातिबंधकेवशतैं ते आसुरपुरुष वेदोंकूं तथास्मृतिपुराणइतिहासादिकोंकूं प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष तिनवेदस्मृतिआदिकोंकरिकैबोधित धर्म अधर्मकूं तथाईश्वरकूं अंगी कारकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष निर्भयहोइकै निषिद्धआचरणकूंहींकरेहैं ॥ तानिषिद्धआचरणकरिकै तेआसुरपुरुष धर्मरूपपुरुषार्थतैं तथामोक्षरूप पुरुषार्थतैं भ्रष्टहींहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोधर्मअधर्महै ॥ तार्धर्मअधर्मकीसहायताकरिकै इससर्वजगत्काकारणरूप जोप्रकृतिकाअधिष्ठातापरमेश्वरहै ॥ ताकारणरूपपरमेश्वरतैरहित इसजगत्कूं तेआसुरपुरुष जो अंगीकारकरेंगे ॥ तौंकारणकेअभावहुए तिसजगत्कार्यकी उत्पत्ति तिनोंकेमतविषे कैसेहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अपरस्परसंभूतंइति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं ईश्वरतैंउत्पन्नहुआ मानतेनहीं ॥ किंतु इसजगत्कूं अपरस्परसंभूत मानेहैं ॥ अर्थात् विषयसुखकी अभिलाषारूपकामनै प्रेरणाकन्याहै पुरुषहै तथास्त्रीहै तिसपुरुषस्त्रीदोनोंकेसंयोगतैंहीं यहजगत् उत्पन्नहुआहै ॥ यातैंयहजगत् कामहेतुकहै ॥ अर्थात् इसजगत्का सोकामहीं कारणहै ॥ ताकामतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजगत्कीउत्पत्तिविषे धर्मअधर्मकूंभी कारणमान्याचहिये ॥ काहेतैं जो कदाचित् धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण नहींमानिये ॥ तौं इसजगत्विषे कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणी मूर्खहै कोईप्राणी पंडितहै इसप्रकारकीव्यवस्था नहींहोवैंगी ॥ और धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण मानणेविषे साव्यवस्था सिद्धहोइसकेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (किमन्यत्इति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मरूपअदृष्टकूं इसजगत्का कारणमानतेनहीं ॥ काहेतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेअंगीकारकीयेहुएभी अंतविषे स्वभावविषेहीं परिअवसानहोवैंगा ॥ तास्वभावकरिकैहीं इसजगत्विषे सुखदुःखादि अदृष्टकल्पनायाअन्यायत्वात्) ॥ अर्थयह ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाकरणी अयुक्तहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वप्राणीयोंकाकारणहै ॥ तिसकामतैंभिन्न दूसराकोई धर्मअधर्मरूपअदृष्ट तथाईश्वरादिक इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ इसप्रकार तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं केवल कामहेतुकहींकहेहैं ॥ यहपूर्वउक्तदृष्टि देहात्मवादीलोकायतिकपुरुषोंकीकथनकरीहै इति ॥ ८ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहपूर्वउक्त लोकायतिक पुरुषोंकीदृष्टिभी शास्त्रीयदृष्टिकीन्यांई इष्टरूपहीहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तादृष्टिविषे अनिष्टरूपताकूं कथनकरेहै ॥ मुमुक्षुजनोंकूं तिसदृष्टितैं निवृत्त करणेवास्तै ॥

(मू० श्लो०) एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥ एतां । दृष्टिं । अवष्टभ्य । नष्टात्मानः । अल्पबुद्धयः । प्रभवन्ति । उग्रकर्माणः । क्षयाय । जगतः । अहिताः ॥ ९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन इस पूर्वोक्त दृष्टिकूं आश्रयण करिके ते नष्टात्मा अल्पबुद्धि उग्रकर्मवाले शत्रुपुरुष सर्वप्राणियोंके नाश करने वासतै व्याघ्र सर्पादिरूप करिके उत्पन्न होवैहैं ॥ ९ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन इस पूर्वश्लोक विषे कथन करी जा लोकायतिक पुरुषों की दृष्टि है ॥ तिस दृष्टिकूं आश्रय करिके ते आसुरपुरुष नष्टात्मा होवैहैं ॥ तहां काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिरूप रजतमदोष करिके नष्टहुआ है क्या आवृतहुआ है आत्मा क्या विवेकबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम नष्टात्मा है अर्थात् ते आसुरपुरुष परलोकके साधनोंतैं भष्टहुएहैं ॥ पुनः कैसेहैं ते आसुरपुरुष अल्पबुद्धिहैं ॥ तहां अत्यंत तुच्छ जे स्रक् चंदन वनिता इत्यादिक विषयोंके भोगहैं तिनोंकानाम अल्पहैं ॥ ऐसे विषय भोगरूप अल्पविषेहै बुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अथवा मल मांस रुधिर अस्थि मज्जा इत्यादिक निर्दित पदार्थोंका समूहरूप जोयह देहहै ताकानाम अल्पहै ॥ ऐसे अल्पदेहविषेहै अहंबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अर्थात् दृष्टविषय सुखमात्रका उद्देश करिके प्रवृत्तहुईहै बुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ पुनः कैसेहैं ते आसुरपुरुष उग्रकर्माहैं ॥ तहां उग्रहैं क्या अत्यंत क्रूरहैं कर्म जिनोंके तिनोंकानाम उग्रकर्माहै ॥ अर्थात् देहमात्रका पोषणहै प्रयोजन जिनोंका तथा जीवोंकी हिंसाहै प्रधान जिनोंविषे ऐसे जे शास्त्रनिषिद्धकर्महैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूंहीं ते आसुरपुरुष सर्वदा करेहैं ॥ पुनः कैसेहैं ते आसुरपुरुष अहिताहैं ॥ अर्थात् अपकार कीयेतैं विनाहीं सर्वप्राणीमात्रकेशत्रुहैं ॥ इसप्रकार पूर्वोक्त लोकायतिक पुरुषोंकी दृष्टिकूं आश्रयण करिके नष्टात्माहुए तथा अल्पबुद्धिहुए तथा उग्रकर्माहुए तथा शत्रुहुए ते आसुरपुरुष सर्वप्राणीमात्रके नाश करने वासतैं व्याघ्र सर्पादिरूप करिके उत्पन्न होवैहैं ॥ यातैं यह पूर्वश्लोक उक्त लोकायतिक पुरुषों की दृष्टिहीं अत्यंत अधोगतिका हेतुहै ॥ इसकारणतैं श्रेयकी इच्छावान् पुरुषोंनैं सर्वप्रकार करिके सादृष्टि परित्याग करने योग्यहै इति ॥ ९ ॥ * ॥ इसप्रकार व्याघ्र सर्पादिकतामसीयोनियोंविषे बहुतकालपर्यंत भ्रमण करतेहुए ते आसुरपुरुष जवी किसीकर्मके वशतैं पुनः मनुष्ययोनिकूं प्राप्त होवैहैं ॥ तवीभी ते आसुरपुरुष आपणे श्रेयके उपायविषे प्रवृत्त होवैनहीं ॥ किंतु अश्रेयके उपायविषेहीं प्रवृत्त होवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथन करेहै ॥

(मू० श्लो०) काममाश्रित्य दुष्पूरं दंभमानमदान्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वा सद्राहान् प्रवर्ततेऽशुचित्रताः ॥ १० ॥ कामं । आश्रित्य । दुष्पूरं । दंभमानमदान्विताः । मोहात् । गृहीत्वा । असद्राहान् । प्रवर्तते । अशुचित्रताः ॥ १० ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन

दुष्पूर कामकं आश्रयणकरिकै दंभमानमदकरिकैयुक्तहुए तथा अशुचित्रतवालेहुए ते आसुरपुरुष अविवेकतैं अशुभनिश्चयोंकूं
ग्रहणकरिकै वेदविरुद्धकर्मोंविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ १० ॥ ॥ इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शतकोटीवर्षपर्यंतभी विषयोंकेभोगकरिकै नहींपूर्णहोनेहारा ऐसाजो तिसतिसदृष्टविषयोंकी अभिलाषारूपकामहै ॥ ऐसेदुष्पूरकामकं आश्रयणकरिकै तेआसुरपुरुष दंभ मान मद इनतीनोंकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठतैरहितहोइकैभी जोबाह्यतैं लोकोंकेआगे आपणाधर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और वास्तवतैं पूज्यभावकेअयोग्यहुएभी जा लोकोंकेआगे आपणापूज्यपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम मानहै ॥ और वास्तवतैं अधिकताकाआरोपणहै जो आपणेविषे अधिकताकाआरोपणहै ताकानाम मदहै ॥ जोमद श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेका हेतुरूपहै ॥ ऐसे दंभ मान मद तीनोंकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष केवलअविवेकतैं असत्प्राहोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इनस्त्रीयोंका आकर्षणकरेंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम महान्निधियोंकूंसंपादनकरेंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इसशत्रुकूंमारेंगे ॥ इत्यादिक दुराग्रहरूप अशुभनिश्चयोंकूं केवल अविवेकरूपमोहतैं ग्रहणकरिकै तेआसुरपुरुष अशुचित्रताहोवैहैं ॥ तहां श्मशानादिकदेश तथाउच्छिष्टत्वादिकअवस्था तथामद्यमांसादिकोंकाभक्षण इत्यादिकअशौचकीअपेक्षाकरिकै सिद्धहोनेहारे जेवामंत्रउक्तवतहैं ॥ तेअशुचित्रतहैंजिनोंके तिनोंकानाम अशुचित्रताहै ॥ ऐसेअशुचित्रतहुए तेआसुरपुरुष केवल दृष्टफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकाआराधनरूप जिसीकिसी वेदविरुद्धकर्मविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ ऐसेआसुरपुरुष मरिकै अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १० ॥

॥ * ॥ अब श्रीभगवान् इनपूर्वउक्तआसुरपुरुषोंकूंहीं पुनः आसुरीसंपद्रूप अनेकविशेषणोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) चिंतामपरिमेयांचप्रलयांतामुपाश्रिताः ॥ कामोपभोगपरमाएतावदितिनिश्चिताः ॥ ११ ॥ चिंताम् । अपरिमेयाम् । च । प्रलयांताम् । उपाश्रिताः । कामोपभोगपरमाः । एतावत् । इति । निश्चिताः ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तथा मरणपर्यंतस्थित अपरिमित चिंताकूं जिनोंनेआश्रयणकन्याहै तथा शब्दादिकविषयोंकाभोगहींहैंपरमपुरुषार्थजिनोंकूं तथा यहविषयजन्यदृष्टिहोसुखहै तिसप्रकारहै निश्चयजिनोंका ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूप जोयोगहै ॥ तथा प्राप्तवस्तुकापरिरक्षणरूपजोक्षेमहै ॥ तिसआपणेयोगक्षेमकेउपायकाचिंतनरूप जाचिंताहै ॥

कैसीहैसाचिंता अपरिमेयहै ॥ अर्थात् असंख्यातपदार्थविषयकहोनेतैसाचिंताभी असंख्याताहै ॥ साचिंता इतनीसंख्यावालीहै इसप्रकारतै निश्चयकरणकूंअशक्य है ॥ पुनः कैसीहैसाचिंता प्रलयांताहै ॥ ईहां मरणकानाम प्रलयहै ॥ सोमरणरूपप्रलयहैअंतजिसका ताकानाम प्रलयांताहै ॥ अर्थात् जीवत्कालपर्यंत वर्तमानहै ॥ ऐसीअपरिमेय तथाप्रलयांत चिंताकूं तेआसुरपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ ईहां (चिंतामपरिमेयांच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ सोचकार पूर्वउक्तअशुचित्रतकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष केवल अशुचित्रतवालेहुए तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ किंतु इसप्रकारकीचिंताकूं आश्रयणकरतेहुएभी तेआसुरपुरुष तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष सर्वकालविषे अनंतचिंतावांकरिकैयुक्तहुएभी कदाचित्भी परलोककीचिंताकरिकैयुक्तहोतेनहीं ॥ किंतु तेआसुरपुरुष कामोपभोगपरमाहींहोवैहैं ॥ तहां रूपणपुरुषोंकेकामनाकाविषयभूत जेशब्दस्पर्शादिकदृष्टविषयहैं तिनोंकानाम कामहै ॥ तिनशब्दादिकविषयरूपकामोंकाउपभोगहै परम क्या पुरुषार्थ जिनोंकूं धर्मादिक जिनोंकूं पुरुषार्थरूपहै नहीं तिनोंकानाम कामोपभोगपरमाहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष इसलोकके स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगकूंहीं परमपुरुषार्थरूपकरिकैमानेहैं ॥ धर्मकूं तथामोक्षकूं पुरुषार्थरूप मानतेनहीं ॥ शंका हेभगवन् तेआसुरपुरुष जैसे इसलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरेहैं ॥ तैसे परलोककेउत्तमसुखकीकामना किसवासतैनहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (एतावदितिनिश्चिताः) तहां इसलोकविषे शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेभोगतैजन्य जो दृष्टसुखहै सोईहींसुखहै ॥ इसदृष्टसुखतैभिन्न इसशरीरके वियोगहुएतैअनंतर भोगणेयोग्यदूसराकोईसुखहैनहीं ॥ काहेतै इसस्थूलशरीरतैभिन्नदूसराकोईभोक्ताहैनहीं ॥ जोभोक्ता परलोकविषे जाइकै तिससुखकूंभोगे ॥ किंतु यहस्थूलशरीरहीं भोक्ताआत्माहै ॥ इसप्रकारकेनिश्चयवालेहुए तेआसुरपुरुष परलोककेसुखकीकामनाकरतेनहीं ॥ यहआसुरपुरुषोंकामत बृहस्पतिनैभी कथनकन्याहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (चैतन्यविशिष्टःकायःपुरुषः ॥ कामएवैकःपुरुषार्थः ॥) अर्थयह ॥ चैतन्यरूपधर्मकरिकैविशिष्ट जोयह स्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरहीं आत्माहै ॥ और इसलोकके स्रक्चंदनवनितादिकविषयोंकाभोगहीं परमपुरुषार्थहै इति ॥ यद्यपि बृहस्पति वैदिकपुरुषहै ॥ तथापि असुरोंकेमोहकरणे वासतै तिसबृहस्पतिनै इसप्रकारकेसूत्ररचेहैं ॥ याकारणतैहीं वैदिकपुरुष तिनसूत्रोंकंप्रमाणरूप मानतेनहीं इति ॥ ११ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आशापाशशतैर्वद्धाःकामक्रोधपरायणाः ॥ ईहंतैकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ आशापाशशतैः । वद्धाः । कामक्रोधपरायणाः । ईहंतै । कामभोगार्थ । अन्यायेन । अर्थसंचयान् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आशा रूपपाशोंकेसमूहकरिकै बांध्येहुए तथाकामक्रोधदोनोहैंआश्रयजिनोंके ऐसेतेआसुरपुरुषविषयभोगवासतैहीं अन्यायकरिकै धनदिकपदार्थोंकूं ईच्छतेहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय करणेंकूंअशक्यहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ अथवा जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय आपणेंकूं ज्ञातनहींहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ तेआशाहीं लोकप्रसिद्धपाशकीन्यांई इसपुरुषकेबंधनकाहेतुहोणेतें पाशरूपहैं ॥ ऐसे आशासूत्रपाशोंके अनेकशतोंकरिकै अर्थात् अनेकसमूहोंकरिकै तेआसुरपुरुष बांध्येहुएहैं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धरज्जुआदिकपाशोंकरिकैबांध्येहुए चौरा दिकदुष्टपुरुष तिनरज्जुआदिकपाशोंनें आपणेंगृहादिकस्थानोंतैनीकासिकै जहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ तैसे आशासूत्रपाशोंकरिकैबांध्येहुए ययआसुरपुरुषभी तिन आशासूत्रपाशोंनें श्रेयसस्वस्थानतैनीकासिकैजहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष कामक्रोधपरायणहैं ॥ तहां कामक्रोध यहदोनोंहै परअयन क्या आश्रय जिनोंका तिनोंकानाम कामक्रोधपरायणहै ॥ अर्थात् परस्त्रीयोंकेसंभोगकीअभिलाषाकरिकै तथापरकेअनिष्टकरणेकीअभिलाषाकरिकै तेआसुरपुरुष सर्वदा युक्तहैं ॥ ऐसे आसुरपुरुष केवल स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगवासतैंहीं धनादिकपार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ कोईधर्मकेवासतै तेआसुरपुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और तेआसुरपुरुष विषयभोगवासतै जोधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ सोभीशास्त्र उक्तमार्गकरिकै ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु केवल अन्यायकरिकैहीं ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ तहां छलकपटकरिकै अथवा बलात्कारसैं जो परकेधनकाहरणकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ अर्थात् शास्त्रतैविरुद्धमार्गकरिकै जोधनकासंपादनकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ ईहां (अर्थसं चयान्) इसबहुवचन करिकै श्रीभगवान्नें तिनआसुरपुरुषोंविषे लोभ दिखाया ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंकूं धनकीप्राप्तिहुएभी तिसधनकीतृष्णा निवृत्तहोतीनहीं ॥ किंतु साधनकीतृष्णा दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ और धनादिकविषयोंकेप्राप्तहुएभी जो दिनदिनविषे तिनविषयोंके तृष्णाकीवृद्धिहै तिसकूंहीं शास्त्रविषे तथालोकविषे लोभकहेहैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनआसुरपुरुषोंकेचित्तविषे इसप्रकारकीधनकीतृष्णाहै यहवार्त्ताकैसे जानीजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंके इसप्रकारकीधनकीतृष्णाकूं तिनआसुरपुरुषोंके मनोराज्योंके कथनकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इदमद्यमया लब्धमिमं प्राप्स्येमनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ १३ ॥ इदम् । अद्य । मैया । लब्धम् । ईमं । प्राप्स्ये । मनोरथम् । ईदम् । अस्ति । ईदम् । अपि । मे । भविष्यति । पुनः । धनम् ॥ १३ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ यह धन इसकालविषे हमनें पायाहै इस मनोरथकूं मैशीघ्रहीं प्राप्तहोऊंगा तथा यह धन हमारेगृहविषे पूर्वहीं विद्यमानहै तथा यह धन भी अगलेवर्षविषे पुनः बहुततहोवैगा ॥ १३ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष निरंतर धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष इसप्रकारके मनोराज्योंकूंकरेहैं ॥ यहधन हमनैं अबी इस उपायकरिकै पायाहै ॥ और इसधनतैंअन्य दूसरेभी मनकीतुष्टिकरणेहारेधनकू में अबी शीघ्रहींप्राप्तहोवौंगा ॥ और यहधन हमारेगृहविषे पूर्वहीं एकठाकन्याहु आहै ॥ सोयहधनभी इसउपायकरिकै अगलेवर्षविषे पुनःबहुतहोवैगा ॥ इसप्रकार धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १३ ॥ इसप्रकारतिनआसुरपुरुषोंकेतृष्णारूपलोभकावर्णनकरिकै अब तिनासुरपुरुषोंकेअभिप्रायकेकथनकरिकै तिनासुरपुरुषोंके क्रोधकाभी वर्णनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ॥ ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंवलवान्सुखी ॥ १४ ॥ अंसौ । मया । हंतः । शत्रुः । हनिष्ये । च । अपरान् । अपि । ईश्वरः । अहं । अहं । भोगी । सिद्धः । अहं । बलवान् । सुखी ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हमनैं यह शत्रु हननकन्याहै तथा दूसरेशत्रुओंकू भी मैं हननकरूंगा मैं ईश्वरहूं तथा मैं भोगीहूं तथा मैं सिद्धहूं तथा बलवान् हूं तथा सुखीहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अत्यंतदुर्जय जोयह देवदत्तनामा हमाराशत्रुथा ॥ सोयहशत्रु हमनैं हननकन्याहै ॥ यातैं अबी मैं विनाहींआयासतैं दूसरेभीसर्वशत्रुओंकू हननकरूंगा हमारेतैं कोईभीशत्रु जीवनकूंप्राप्तहोवैंगानहीं ॥ ईहां (हनिष्येच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै यहअभिप्राय सूचनकन्या ॥ तिनाशत्रुओंकू मैंकेवल हननहींनहींकरूंगा ॥ किंतु तिनाशत्रुओंके धनदारादिकपदार्थोंकूभी मैंहरणकरूंगा इति ॥ शंका ॥ तुमारेतुल्य अथवा ॥ तुमारेतैंभीअधिक दूसरेशत्रु विद्यमानहैं ॥ यातैं सर्वशत्रुओंकेनाशकरणेकासामर्थ्य तुमारेविषे किसेहुतैहै ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहैहैं ॥ (ईश्वरोहंइति) मैंईश्वरहूं केवल मनुष्यनहींहूं ॥ जिसमनुष्यपणेकरिकै हमारेतुल्य अथवा हमारेतैंअधिककोईपुरुषहोवै ॥ यहअत्यंततुच्छबलवालेदीनजन हमारी क्याहानिकरैगे ॥ सर्वप्रकारतैं हमारेतुल्य कोईभीप्राणीनहींहै इसअभिप्रायकरिकै तेआसुरपुरुष आपणेईश्वरपणेकू वर्णनकरैहैं (अहंभोगीइति) जिसकारणतैं मैंहीं भोगीहूं ॥ अर्थात् विषय भोगोंकेसर्वसाधनोंकरिकै मैंहीं युक्तहूं ॥ तथा मैंहीं सिद्धहूं ॥ अर्थात् भ्राता पुत्र भृत्य इत्यादिकसहायकरिकै मैंहीं संपन्नहूं ॥ तथा स्वतःभी मैंबलवान् हूं ॥ अर्थात् अत्यंतओजसवालाहूं ॥ तथा मैंहीं सुखीहूं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं नीरोगहूं ॥ इसकारणतैं मैं ईश्वरहींहूं इति ॥ १४ ॥ * ॥ शंका ॥ धनकरिकै अथवा कुलकरिकै कोईपुरुष तुमारेतुल्यहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुषकहैहैं ॥

(मू० श्लो०) आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया ॥ यक्ष्येदास्यामिमोदिष्येइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ आढ्यः । अभि
जनवान् । अस्मि । कः । अन्यः । अस्ति । सदृशः । मया । यक्ष्ये । दास्यामि । मोदिष्ये । इति । अज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥
(इतिपदच्छेदः) ॥ धनवान् तथाकुलवान् मैंहीं यातैं हमारे सदृश दूसरा कौनहैं मैं यागंकूंकहंगा तथादानकूंकहंगा तिसतैं
हर्षकूप्राप्तहोवूंगा इसप्रकार तेआसुरपुरुष अविवेकरिकैमोहितहोवैंहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इसलोकविषे मैंहीं धनवान्हूं ॥ तथा कुलीनभीमैंहींहूं ॥ इसकारणतैं इसलोकविषे धनकरिकै तथा कुलकरिकै हमारेसमान दूसराकौनहैं ॥ किंतु
हमारेसमानदूसराकोईभीपुरुष धनवान् तथाकुलवान् नहींहैं ॥ शंका ॥ धनकरिकै तथाकुलकरिकै तुमारेतुल्य कोईमतहोवौ ॥ तौंभी यागकरिकै तथादानकरिकै
तुमारेतुल्य कोईहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहेहैं ॥ (यक्ष्येदास्यामिइति) मैंआपणीप्रतिष्ठाकेवासतैं इसप्रकारकेमहान्यागकूंकरोंगा ॥ तिसयाग
करिकैभी मैं दूसरेसर्वयागकरणेहारेपुरुषोंकू अभिभवकरौंगा ॥ यातैं यागकरिकैभी हमारेतुल्य कोईहैनहीं ॥ और हमारीस्तुतिकरणेहारेजे नट भाट नर्तकी
आदिकहैं ॥ तिननटादिकोंकेताई मैं बहुत धन देवूंगा ॥ तिसधनकेदेणेतैं मैं नर्तकीआदिकोंकेसाथि बहुतहर्षकूप्राप्तहोवूंगा ॥ यातैं दानकरिकैभी हमारेतुल्य
कोईहैनहीं ॥ इसप्रकारतैं तेआसुरपुरुष अविवेकरूपअज्ञानकरिकै मोहितहोवैंहैं ॥ अर्थात् तिसअविवेकरूपअज्ञानतैं तेआसुरपुरुष भ्रमकीपरंपरारूप विविधप्रका
रकेमोहकू प्राप्तकरीतेहैंइति ॥ १५ ॥

(मू० श्लो०) अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताःकामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ अनेकचित्तविभ्रांताः ।
मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः । कामभोगेषु । पतंति । नरके । अशुचौ ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अनेकदुष्टसंकल्पोकरिकै
विभ्रांतहूए तथामोहरूपजालकरिकैआवृतहूए तथाविषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहूए तेआसुरपुरुष अशुचि नरकविषे पतन
होवैंहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकन्येजे अनेकप्रकारकेचित्तकेदुष्टसंकल्पहैं ॥ तिन अनेकचित्तकेदुष्टसंकल्पोकरिकै विविधप्रकारकीभांतिहुईहै जिनोंकू तिनोंका
नाम अनेकचित्तविभ्रांताहै ॥ अथवा नहींहैंएकवस्तुचित्तनकाविषय जिसका ताकानाम अनेकहै ॥ अनेकहै क्या पूर्वउक्तबहुतविषयोंविषेसंलग्नहै चित्त जिनों
का तिनोंकानाम अनेकचित्तहै ॥ और यहकार्य आदिविषेकरणेयोग्यहै अथवा यहकार्य आदिविषेकरणेअयोग्यहै इसप्रकार विशेषकरिकै जेपुरुष भांतिक

रिकैयुक्तहैं ॥ तिनोंकानाम विभांतहै ॥ अनेकचित्तहोवैं तेहीं विभांतहोवैं तिनोंकानाम अनेकचित्तविभांतहै ॥ अब ताभांतिकीप्राप्तिविषेहेतुकहेहै (मोहजाल समावृताःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेआसुरपुरुष मोहरूपजालकरिकै आवृतहुएहैं ॥ तिसकारणतैं तेआसुरपुरुष पूर्वउक्तअनेकदुष्टसंकल्पोकरिकै विविध प्रकारकीभांतिकंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेहितकासाधनहै ॥ और यहवस्तु हमारेअहितकासाधनहै इसप्रकारके हितअहितविवेकका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम मोहहै ॥ सोमोहहीं आवरणरूपताकरिकै बंधनकाहेतुहोणेतैं लोकप्रसिद्धजालकीन्याई जालरूपहै ॥ ऐसेमोहरूपजालकरिकै तेआसुरपुरुष सम्यक् आवृतहुएहैं ॥ अर्थात् तिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष सर्व औरतैंवेष्टनकन्येहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध सूत्रमयजालनैं मत्स्यादिकजंतु परवशकरीतेहैं तैसेतिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष परवशकन्येहै ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष आपणेअनिष्टकेसाधनरूपभी विषयभोगोंविषे प्रसक्तहुएहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकरिकै तिनविषयभोगोंविषेहीं अत्यंतआसक्तहुएहैं तिसविषयभोगोंकीआसक्तिकरिकै क्षणक्षणविषे पापोंकूसंचयकरतेहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरक विषे पतनहोवैंहैं ॥ अर्थात्विष्ठा श्लेष्म रुधिर इत्यादिकमलिनपदार्थोंकरिकैपूर्ण जे वैतरणीआदिकनरकहैं ॥ तिननरकोंविषेहींतेआसुरपुरुष पतनहोवैंहैं इति ॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसआसुरपुरुषोंकेमध्यविषेभी कितनैंकी आसुरपुरुषोंकी यागादिककर्मोंविषे प्रवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं तिनआसुरपुरुषोंका नरकविषेपतनकहणा अयुक्तहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) आत्मसंभाविताःस्तब्धा धनमानमदान्विताः ॥ यजंतेनामयज्ञैस्तेदंभेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ आत्मसंभाविताः । स्तब्धाः । धनमानमदान्विताः । यजंते । नामयज्ञैः । तै । दंभेन । अविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आत्मसंभावित तथास्तब्ध तथाधनमानमदकरिकैयुक्त तेआसुरपुरुष नाममात्रयज्ञोंकरिकै अविधिपूर्वक दंभकरिकै यजनकरेहैं ॥ ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष आत्मसंभावितहैं ॥ अर्थात् हम सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहैं ॥ इसप्रकार आपणेआपकरिकैहीं पूज्यताकंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषोंकरिकै पूज्यताकंप्राप्तहुएनहीं ॥ अथवा आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकरिकैहीं तेआसुरपुरुष पूज्यताकंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषकरिकै पूज्यताकंप्राप्तहुएनहीं ॥ पुनःकैसेहैंते आसुरपुरुष स्तब्धहैं ॥ अर्थात् नम्रभावतैरहितहैं तानम्रताकेअभावविषेहेतुकहेहै (धनमानमदान्विताःइति) तहां सुवर्ण पशु अन्न गृह भूमि इत्यादिकोंकानाम धनहै ॥ सोधनहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेविषे पूज्यत्वरूपअतिशयताकाअध्यासहै ताकानाम मानहै ॥

सोमानहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेतैभिन्न आपणेगुरुआदिकोंविषेभी अपूज्यत्वकाअभिमानहै ॥ ताकानाम मदहै ॥ ऐसे धननिमित्तकमानकरिकै तथामान निमित्तकमदकरिकै युक्तहुए तेआसुरपुरुष नामयज्ञोंकरिकै यजनकरेहैं तहां जेयज्ञ केवल नाममात्रकरिकैहीं यज्ञरूपहोवैं वास्तवतैं यज्ञरूपहोवैंहीं तिनयज्ञोंकाना म नामयज्ञहै अथवा जेयज्ञ कर्त्तापुरुषविषे दीक्षित सोमयाजी इत्यादिकनाममात्रकेहीं संपादकहोवैंहैं ॥ किसीधर्मकेसंपादकहोतेनहीं ॥ तिनयज्ञोंकानाम नामयज्ञ है ॥ ऐसे नाममात्रयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष विधिपूर्वककरतेनहीं ॥ किंतु अविधिपूर्वकहींकरेहैं ॥ अर्थात् वेदनैं विधानकन्ये जे द्रव्य देवता मंत्र दक्षिणा इत्यादिक यज्ञकेअंगहैं ॥ तिनअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकूंकरतेनहीं ॥ ऐसेयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष कोईश्रद्धापूर्वक करतेनहीं ॥ किंतु दंभ करिकैकरतेहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी बाह्यतैंलोकोंकेआगे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकरिकै तेआसुरपुरुष यज्ञोंकूंकरेहैं ॥ इसकारणतैं तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकेफलोंकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां (यक्ष्येदास्यामि) इसवचनकरिकैकथनकन्याजो दंभअहंकारादिकहैप्रधानजिसविषे ऐसासंकल्पहै ॥ तिससंकल्पकरिकैप्रवृत्तहुए तिनआसुरपुरुषोंके बहिरंगसाधनरूप यागदानादिककर्मभी सिद्धहोतेनहीं ॥ तौ विचार वैराग्य भगवद्भक्ति इत्यादिकअंतरंगसाधन तिनआसुरपुरुषोंके कैसेसिद्धहोवैंगे ॥ किंतु ते अंतरंगसाधन तिनोंके कदाचित्भी सिद्धनहींहोवैंगे ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अहंकारंबलंदर्पकामंक्रोधंचसंश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ अहंकारं । बलं । दर्पं । कामं । क्रोधं । च । संश्रिताः । माम् । आत्मपरदेहेषु । प्रद्विषंतः । अभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं आश्रयणकरणेहारे तथा आपणेदेहपरदेहोंविषेस्थित मैपरमेश्वरका द्वेषकरणेहारे तंथाअसूया दोषवाले तेआसुरपुरुष नरकविषेहींपडेहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अहंअभिमानरूपजोअहंकारहै ॥ सोअहंकारतौ सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणअहंकार ईहां अहंकारशब्दकरिकैग्रहणकर गानहीं ॥ किंतु जेगुण आपणेविषेहैंहीं तिनगुणोंकाआपणेविषे आरोपणकरिकै तिनआरोपितगुणोंकरिकै जो आपणेमहान्पणेकाअभिमानहै ताकानाम अहं कारहै ॥ इसप्रकार शरीरविषे कार्यकरणेकासामर्थ्यरूपजोबलहै ॥ सोबलतौ सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणबल ईहां बलशब्दकरिकै ग्रहणकर गानहीं ॥ किंतु अन्यप्राणीयोंकेपराभवकरणेवासैतै जो शरीरविषेस्थित सामर्थ्यविशेषहै ताकानाम बलहै ॥ और अन्यप्राणीयोंकीअवज्ञारूप तथागुरुराजादिक

महान्पुरुषोंके उल्लंघन करने का कारण रूप ऐसा जो चित्त का दोष विशेष है ताका नाम दर्प है ॥ और इष्टवस्तु विषयक जा अभिलाषा है ताका नाम काम है ॥ और अ
निष्टवस्तु विषयक जो द्वेष है ताका नाम क्रोध है ॥ ईहां (क्रोधं च) इस वचन विषे स्थित जो चकार है ॥ तिस चकार करिके परगुणों के नहीं सहन करने का स्वभाव रूप मात्सर्य का
तथा अन्य भी महान् दोषों का ग्रहण करना ॥ ऐसे अहंकार बल दर्प काम क्रोध मात्सर्य इत्यादिक महान् दोषों कूं ते आसुरपुरुष सर्वदा आश्रयण करे हैं ॥ इसका
रण तैं ते आसुरपुरुष नरक विषे ही पड़े हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् इस प्रकार के पतित भी ते आसुरपुरुष आप परमेश्वर की भक्ति करिके पावन हुए नरक विषे नहीं पड़ेंगे ॥
ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ श्री भगवान् तिन आसुरपुरुषों विषे भगवद्भक्तिका असंभव कथन करे है (मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतः इति) ईहां देहशब्द का आत्मशब्द के
अंत विषे तथा परशब्द के अंत विषे संबंध करने तैं (मां आत्मदेहेषु परदेहेषु प्रद्विषंतः) इस प्रकार का वाक्य सिद्ध होवै है ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इस पद करिके तिन आ
सुरपुरुषों के देहों का ग्रहण करना ॥ और (परदेहेषु) इस पद करिके तिन आसुरपुरुषों के पुत्र भार्यादिकों के देहों का ग्रहण करना ॥ या तैं (मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतः)
इस वचन का यह अर्थ सिद्ध होवै है ॥ तिन आसुरपुरुषों के प्रेम का विषय भूत जे आपने देह हैं तथा पुत्र भार्यादिकों के देह हैं ॥ तिन सर्व देहों विषे तिनों के बुद्धिकर्मादिकों का
साक्षी रूप करिके विद्यमान तथा निरतिशय प्रीति का विषय ऐसा जो मैं परमेश्वर हूं ॥ तिस मैं परमेश्वर विषयक द्वेष कूं ही ते आसुरपुरुष करे हैं ॥ तहां मैं परमेश्वर की आज्ञा रूप
जो श्रुति स्मृति रूप शास्त्र है ॥ तिस शास्त्र उक्त अर्थ के अनुष्ठान तैरहित पणे करिके जो तिस शास्त्र रूप आज्ञा का उल्लंघन है ॥ यह ही मैं परमेश्वर विषयक द्वेष है ॥ और इस
लोक विषे भी राजादिक महान् पुरुषों के आज्ञा कूं जो पुरुष उल्लंघन करे है ॥ तिस पुरुष कूं तिन राजादिकों का द्वेषी कहें हैं ॥ ऐसे मैं परमेश्वर के द्वेष कूं करने हारे तिन आसुर
पुरुषों विषे मैं परमेश्वर की भक्ति होणी अत्यंत दुर्घट है इति ॥ शंका ॥ हे भगवन् ऐसे आसुरपुरुषों कूं आपने गुरु आदिक महान् पुरुष क्युं नहीं शिक्षा करते ॥ ऐसी अर्जु
न की शंका के हुए श्री भगवान् कहे है (अभ्यसूयकाः इति) हे अर्जुन वेद प्रतिपादित मार्ग विषे स्थित जे गुरु आदिक वृद्ध पुरुष हैं ॥ तिन गुरु आदिकों विषे स्थित करुणादिक
गुणों विषे ते आसुरपुरुष वंचना आदिक दोषों का ही आरोपण करे हैं ॥ ऐसे असूया दोष वाले आसुरपुरुषों कूं तिन गुरुओं के वचनों विषे श्रद्धा ही होती नहीं ॥ या तैं
ते गुरु भी तिन आसुरपुरुषों कूं शिक्षा करते नहीं ॥ इस प्रकार बहिरंग रूप तथा अंतरंग रूप सर्व साधनों तै शून्य हुए ते आसुरपुरुष केवल नरक विषे ही पड़े हैं
इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतः) इस वचन का यह दूसरा अर्थ करना ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इस पद करिके तिन आसुरपुरुषों के देहों का
ग्रहण करना ॥ और (परदेहेषु) इस पद करिके पशु आदिकों के देहों का ग्रहण करना ॥ ता करिके यह अर्थ सिद्ध होवै है ॥ तिन आसुरपुरुषों के देहों विषे
तथा पशु आदिकों के देहों विषे चैतन्य अंश करिके स्थित जो मैं परमेश्वर हूं तिस मैं परमेश्वर विषयक द्वेष कूं करते हुए ते आसुरपुरुष यजन करे हैं ॥ तहां दंभ पूर्वक क्ये हुए

तिनयज्ञोंविषे तिनआसुरपुरुषोंकीश्रद्धाहै नहीं ॥ यातैं तिनश्रद्धाहीनयज्ञोंका दूसरातोंकोईफलहोवैनहीं ॥ किंतु दीक्षादिकनियमोंकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके आत्माकूं केवल व्यर्थहीं पीडाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार पशुआदिकोंकीभी आवीधिपूर्वकाहिंसाकारिकै दूसराकोईफल होवैनहीं ॥ किंतु ताहिंसाकारिकै केवल चैतन्यकाद्रोहमात्रहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसरीतिसैं आपणेदेहोंविषेस्थित तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषेस्थित चैतन्यरूपमैंपरमेश्वरकाद्वेषकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरैहैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रदिषंतः) इसवचनका यहतीसराअर्थकरणा ॥ ईहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै परमेश्वरके लीलाविग्रहरूप रामकृष्णादिकनामवाले देहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै प्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामवाले भक्तजनोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ मैंपरमेश्वरके लीलाविग्रहरूप वासुदेवादिकनामवालेदेहोंविषे मनुष्यत्वबुद्धिरूपभ्रमकरिकै तेआसुरपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं करैहैं ॥ तथाप्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामोंवाले भक्तजनोंकेदेहोंविषे सर्वदा आविर्भावकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं तेआसुरपुरुष करैहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्वनवमेअध्यायविषे (अवजानंतिमामूढामानुषीतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥ मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिमोहिनींश्रिताः) इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकरीथी ॥ तथा (अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नमन्यंतेमामबुद्धयः) इसवचनकरिकैभीपूर्वकथनकरीथी इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ ॥ जिसमैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै अधिकारीजन पावनहोवैहैं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषेहीं तिनआसुरपुरुषोंकाद्वेषहै ॥ ऐसेद्वेषीपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातैं तेआसुरपुरुष किसीप्रकारकरिकैभी पावनहोतेनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरकी कृपाकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकाभी कदाचित् निस्तारहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तिनआसुरपुरुषोंका कदाचित्भी निस्तारहोणेहारानहींहैं ॥ इस प्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) तानहंदिषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥ तान् । अहं । दिषंतः । क्रूरान् । संसारेषु । नराधमान् । क्षिपामि । अजस्रम् । अशुभान् । आसुरीषु । एव । योनिषु ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्वेषकरणेहारे तथाक्रूर तथानरोंविषेअधम तथा निरंतर अशुभकर्मोंकंकरणेहारे ऐसेतिनआसुरपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर नरकजाणेकेमार्गों विषेहीं गेडताहूं तिसतैंअनंतर अत्यंतक्रूर व्याघ्रसर्पादिकयोनियोंविषेहीं गेडताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्गकेविरोधी जे आसुरपुरुषहैं ॥ कैसेहैं तेआसुरपुरुष ॥ मैंपरमेश्वरका तथासाधुजनोंका सर्वदा द्वेषकरणेहारेहैं ॥ पुनः

कैसेहैंतेआसुरपुरुष क्रूरहैं ॥ अर्थात् सर्वदा जीवोंकीहिंसाविषेहींप्रीतिवालेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष सर्वनरोंविषेअधमहैं ॥ अर्थात् अत्यंतनिंदितहैं ॥
 पुनः कैसेहैंतेआसुरपुरुष अशुभहैं ॥ अर्थात् निरंतर शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूँकरनेहारहैं ॥ ऐसेतिन आसुरपुरुषोंकूँ कर्मकेफलकाप्रदाता मैपरमेश्वर नरकजाणेकेमा
 गोंविषेहींगेडताहूँ ॥ और तेआसुरपुरुष आपणेपापकर्मोंकेवशतैं तिननरकोंविषे बहुतकालपर्यंत अनेकप्रकारकेदुःखोंकूँअनुभवकारकैं जबी तिसनरकतैंआवैहैं ॥
 तबी मैपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूँपूर्वलेकर्मवासनावोंकेअनुसार व्याघ्रसर्पादिक अत्यंतक्रूरयोनियोंविषेहीं गेडाताहूँ ॥ ऐसेमैपरमेश्वरकेद्रोही तथासाधुपुरुषोंकेद्रोही
 आसुरपुरुषोंऊपर मैपरमेश्वरकी कदाचित्भी कृपाहोतीनहीं ॥ तहां इसप्रकारकेपापात्माआसुरपुरुषनीचयोनियोंकूँहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी
 कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथकपूयचरणाभ्यासोहयत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिंवा शूकरयोनिंवा चांडालयोनिंवाइति ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रनिषिद्ध
 पापकर्मोंकूँकरनेहारेपुरुषशीघ्रहीं नीचयोनियोंकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ कबीश्वानयोनिकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ कबी शूकरयोनिकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ कबी चांडालयोनिकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ इसतैं
 आदिलैके दूसरीभीअनेकनीचयोनियोंकूँप्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसप्रकार जीवोंकेपूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार फलकीप्राप्तिकरणेहारेईश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दय
 तादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयति ॥) अर्थयह ॥
 इसलोकविषे कोईप्राणीसुखीहै कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी धनीहै कोईप्राणी दरिद्रीहै कोईप्राणी पांडितहै कोईप्राणी मूर्खहै ॥ इसप्रकारकेविषमजगत्कीउत्पत्तिकरणे
 हारे ईश्वरविषे विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी अवश्यकारिकैं प्राप्तिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीव्यासभगवान् कहेहैं ॥ परमेश्वर जीवोंकेपुण्यपापकर्मकी
 अपेक्षाकारिकैं इसविषमजगत्कूँ उत्पन्नकरेहै ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारहीं कोईप्राणी सुखीहोवैहै कोईप्राणी दुःखीहोवैहै ॥ यातैं परमेश्वरविषे विषमतादोषकी
 तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं इसीप्रकारकेअर्थकूँ । (अथकपूयचरणाः ।) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरेहैं इति ॥ ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप सोअंतर्था
 मीपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूँ केवल पापकर्महीं करावैहै ॥ पुण्यकर्मकरावतानहीं ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंविषे केवल पापकर्मोंकाहींबीजविद्यमानहै ॥ पुण्यकर्मों
 काबीज तिनोंविषेहैनहीं ॥ और बीजकेअनुसारहीं अंकुरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अन्यबीजतैं अन्यअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे निंबकेबीजतैं निंबके अंकुरकीहीं
 उत्पत्तिहोवैहैं ॥ तिसनिंबकेबीजतैं आम्रकेअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि सोपरमेश्वर परमकृपालुहै ॥ तथापि सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूँनाशक
 रतानहीं ॥ काहेतैं तिनपापोंकेनाशकरणेहारे जेपुण्यकर्महैं ॥ तेपुण्यकर्म तिनआसुरपुरुषोंविषेहैनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूँनाशकरता
 नहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मोंकेकरणेकीयोग्यताहैनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूँ पुण्यकर्मभी करावतानहीं ॥ जिनपुण्यकर्मोंक

रिकै तिनोकेपापोंकानाशहोवैहै ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहुआभी सोपरमेश्वरविषे जिसवस्तुविषे जिसकार्यकेउत्पत्तिकीयोग्यताहोवैहै तिसवस्तुतैंहीं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरेहै ॥ अयोग्यवस्तुतैं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ जैसे पाषाणोंविषे यवअंकुरकेउत्पत्तिकीयोग्यताहैनहीं यातैं परमेश्वर तिनपाषाणोंविषे यवअंकुरकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ किंतुयवबीजोंविषेहीं तिसयवअंकुरकीउत्पत्तिकरेहै ॥ तैसे पुण्यकर्मकीउत्पत्तिकेअयोग्य तिनआसुरपुरुषोंविषे सोई श्वरभी पुण्यकर्मोंकूँउत्पन्नकरतानहीं और जोकोईवादी यहवचनकहै ॥ कार्यके करणेकूँ तथानकरणेकूँ तथाअन्यथाकरणेकूँ जोसमर्थहोवै ताकानाम ईश्वर है ॥ ऐसाईश्वरहोणेतैं सोपरमेश्वर पुण्यकर्मोंकेअयोग्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताकेसंपादनकरणेमेंसमर्थहींहै इति ॥ सोयहकहणा यद्यपि सत्यहै ॥ काहेतैं सोपरमेश्वर सत्यसंकल्पहै ॥ यातैं सोपरमेश्वर जोकदाचित् इनआसुरपुरुषोंविषेपुण्यकर्मकीयोग्यताहोवै इसप्रकारकासंकल्पकरे ॥ तौ तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताहोइजावै ॥ परंतु सोपरमेश्वर इसप्रकारकासंकल्पहीं करतानहीं ॥ काहेतैं परमेश्वरकीआज्ञारूप जोश्रुतिस्मृति रूपशास्त्रहै ॥ तिसशास्त्रकाउल्लंघनकरणेहारे ॥ तथापरमेश्वरकेभक्तोंकेदोहीं ऐसेजे तेदुरात्माआसुरपुरुषहैं ॥ तिनआसुरपुरुषोंऊपरि तिसपरमेश्वरकीप्रसन्नता हैनहीं ॥ ताप्रसन्नतातैंविना सोपरमेश्वर तिससंकल्पकूँकेसेकरैगा किंतु कदाचित्भी नहींकरैगा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकनथकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषह्ये वसाधुकर्मकारयतितंयमुचिनीषते एषएवसाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषते ॥) अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर प्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूँ ऊपरिलेस्वर्गादिकलोकोविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूँतौ पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और यहपरमेश्वर अप्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूँ नरकादिकअधोलोकोविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूँतौ पापकर्महीं करावैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नताकाकारणरूप जो परमेश्वरकीवेदरूपआज्ञाकापालनहै ॥ सोआज्ञाकापालन जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहै ॥ तिनपुरुषों ऊपरितौ परमेश्वरकी प्रसन्नताहोवैहैं ॥ और जिनपुरुषों विषे सोपरमेश्वरकीआज्ञाकापालन नहींहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरि परमेश्वरकी प्रसन्नताहोतीनहीं ॥ और कारणके विद्यमानहुएहीं कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ कारणकेअभावहुए कार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्धहींहै ॥ इसविषे परमेश्वरकूँ विषमता तथानिर्दयता कैसेप्राप्तहोवैंगी किंतु नहींप्राप्तहोवैंगी इति ॥ १९ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसे आसुरपुरुषोंकाभी क्रमकरिकै बहुतजन्मोंकेअंतविषे श्रेयहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए ॥ ऐसे आसुर पुरुषोंका कदाचित्भी श्रेयहोणेहारानहींहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूँ श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मानिजन्मानि ॥ मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥ आसुरीं । योनिम् ।

आपन्नाः । मूढाः । जन्मनि । जन्मनि । मां । अप्राप्य । एवं । कौंतेय । ततः । यांति । अधमां । गतिम् ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेकौंतेय जेपुरुष कदाचित्भी आसुरियोनिंकूँ प्राप्तहुएहैं तेपुरुष जन्म जन्मविषे अविवेकीहुए वेदमार्गकूँ नप्राप्तहोइकै हीं तिसतैंभी
अधम गतिकूँ प्राप्तहोवैहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष कदाचित्भी आसुरियोनिंकूँप्राप्तहुएहैं ॥ तेपुरुष जन्मजन्मविषे मूढहुए अर्थात् तमोगुणकी बाहुल्यताकरिकै विवेकतैं शून्यहुए ॥
मेरेकूँप्राप्तहोइकै अर्थात् मैंपरमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकूँ नप्राप्तहोइकै तिसतैंभीअत्यंतनिकृष्टगतिकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (मामप्राप्येव) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो
एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द तिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीअयोग्यताकूँबोधनकरेहै ॥ अर्थात् तिनतिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गके
प्राप्तिकी योग्यताहीनहीहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तेआसुरपुरुष वेदमार्गकीप्राप्तिकेअयोग्यहोइकै पूर्वपूर्वनिकृष्टयोनियोंतैं
उत्तरउत्तर अत्यंतनिकृष्ट अधमयोनियोंकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे व्याघ्रयोनितैं सर्पयोनि निकृष्टहै ॥ तिससर्पयोनितैंभी कीटपतंगादिकयोनि निकृष्टहै ॥ ति
सकीटपतंगादिकयोनितैंभी वृक्षादिकयोनि निकृष्टहै इति ॥ ईहांयद्यपि (मामप्राप्य) इसवचनविषेस्थित मां इसपदकरिकै परमेश्वररूपअर्थकीहींप्रतीतिहो
वैहै ॥ तथापि मां इसपदकरिकै परमेश्वरकाग्रहणकरणानहीं ॥ किं तुमां इसपदकरिकै परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाहीं ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे
जोअर्थ किसीभीप्रकारकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं तिसअर्थकानिषेधहोवैहै ॥ सर्वप्रकारतैंअप्राप्तअर्थका निषेधहोतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे
परमेश्वरकेप्राप्तिकीकोईशंकामात्रभीहोतीनहीं ॥ जिसपरमेश्वरकीप्राप्तिका (अप्राप्य) इसशब्दकरिकै निषेधहोवै ॥ यद्यपि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकी
भीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ तथापि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीशंकामात्र कदाचित् होइसकेहै ॥ तिसवेदमार्गकेप्राप्तिकाहीं (अप्राप्य) यहशब्द निषे
धकरेहै ॥ यातैं मां इसपदकीलक्षणवृत्तितैं परमेश्वरउपदिष्टदेवमार्गकाग्रहणकरणा उचितहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ मां इसपदकीलक्षणावृत्तिकरिकै परमे
श्वरकेप्राप्तिकासाधनरूप अविकारीमनुष्यदेहका ग्रहणकन्याहै इति ॥ यातैं इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं एकवारभी आसुरियोनि
कूँप्राप्तहुएपुरुषोंकूँ तिसतैंउत्तरउत्तर निकृष्टतर तथानिकृष्टतम योनियोंकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ और अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकूँ तिननिकृ
ष्टयोनियोंकेनिवृत्तकरणेका सामर्थ्यहोवैनहीं ॥ तिसकारणतैं जितनैंकालपर्यंत अधिकारीमनुष्यदेहकीप्राप्तिहै ॥ तितनैंकालपर्यंत महान्प्रयत्नकरिकै परम
निकृष्टआसुरीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवासतैं शीघ्रहीं इनश्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं यथाशक्तिपरिमाण दैवीसंपदावोंका संपादनकरणा ॥ जोकदाचित् तिनआसु

रीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवासतै यहपुरुष दैवीसंपदावोंका संपादननहींकरैगा ॥ तौं तिनआसुरीसंपदावोंकेवशतैं व्याघ्रसर्पादिकनीचदेहोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतर श्रेयसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषेअयोग्यहोणेतैं इसपुरुषका कदाचित्भीनिस्तारनहींहोवैगा ॥ इसप्रकार सोपुरुष महान्संकटोंकूप्राप्तहोवैगा ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरोषधंस्थानंसरुजःकिंकरिष्यति) ॥ अर्थयह ॥ आसुरीसंपत् रूपनिमित्तकरिकै उत्पन्नहोणेहारी जानरकरूपव्याधिहै ॥ तिसनरकरूपव्याधिकीनिवृत्तिकरणेहारी दैवीसंपदरूपचिकित्साकूं जोपुरुष इस अधिकारीमनुष्यशरीर विषे नहींकरेहै ॥ सोरोगीपुरुष दैवीसंपदरूपऔषधतैं रहितस्थानविषे जाइकै तिननरकरूपव्याधिकेनिवृत्तकरणेवासतै क्याउपायकरैगा ॥ किंतु तहांकोईभीउपाय नहींकरैगाइति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (दंभोदर्पोऽतिमानश्च) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वआपनैं कथनकरीजा आसुरसंपत्है ॥ साआसुरसंपत् अनेकप्रकारकीहै ॥ यातैं सासर्वआसुरसंपत् इसपुरुषनैं आपणेआयुष्कीसमाप्तिपर्यंत प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसआसुरीसंपत्कूं संक्षेपकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ॥ कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्र यं त्यजेत् ॥ २१ ॥ त्रिविधं । नरकस्य । ईदं । द्वारं । नाशनम् । आत्मनः । कामः । क्रोधः । तथा । लोभः । तस्मात् । एतत् । त्रयं । त्यजेत् ॥ २१ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इसपुरुषकूं अधमयोनिओंकीप्राप्तिकरणेहारा यह तीनप्रकारका नरकका द्वारहै काम क्रोध तथा लोभ तिसकारणतैं ईन तीनोंकूं परित्यागकरै ॥ २१ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नरककेप्राप्तिका यहतीनप्रकारकाहीं द्वार कहीये साधनहै ॥ सोयहतीनप्रकारकाद्वारहीं पूर्वउक्त सर्वआसुरसंपत्कामूलभूतहै ॥ तथा आत्मा केनाशकरणेहाराहै ॥ अर्थात् धर्ममोक्षादिकसर्वपुरुषार्थोंकीअयोग्यताकूंसंपादनकरिकै इनपुरुषोंकूं अत्यंतअधमयोनिओंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहां सोतीनप्रकारका नरककाद्वार कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (कामः क्रोधस्तथा लोभः इति) हेअर्जुन काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुष कूं नरककीप्राप्ति करणेहारेहैं ॥ तथा व्याघ्र सर्प कीट पतंग वृक्ष इत्यादिक अत्यंतअधमयोनिओंकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और इनतीनोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतरहीं इसपुरुषकूं तेसर्वआसुरसंपत् प्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं सर्वअनर्थोंकेमूलभूतहैं ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारी पुरुष इनतीनोंका अवश्यकरिकैपरित्यागकरै ॥ इनतीनोंकेपरित्यागकरिकैहीं पूर्वउक्तसर्वहींआसुरसंपत् परित्यागकरीजावैहै ॥ तहां चित्तविषेउत्पन्नहुए कामक्रोध